International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 7 No. 35 March – April - 2026

पर्यावरण और हिंदी साहित्य

डॉ. स्वाती सुधाकर ठुबे

सहकार महर्षी भाऊसाहेब संतूजी थोरात महाविद्यालय संगमनेर तहसील– संगमनेर जिला – अहिल्यानगर , महाराष्ट्र

Corresponding Author – डॉ. स्वाती सुधाकर ठुबे

DOI - 10.5281/zenodo.20485631

सारांश:

पर्यावरण आज एक बहूआयामी शब्द है। पर्यावरण की समस्या समकालीन समय में सबसे चर्चित समस्याओं से एक है। जैसे पर्यावरण और समाज, हरित सौंदर्यशास्त्र,आदि अकादमिक एवं गैर अकादमिक संदर्भ में इसकी व्यापक चर्चा हो रही है।ऐसी समय में साहित्य समाज को जागरूक करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन सकता है। आज पर्यावरण संकट के संदर्भ में भी हिंदी साहित्य की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई है। हिंदी साहित्य में प्रकृति और पर्यावरण का संबंध अत्यंत प्राचीन और गहरा रहा है।तथा मनुष्य और प्रकृति के बीच के आत्मीय संबंधों को अभिव्यक्त किया है। हिंदी साहित्य के विभिन्न कालों में प्रकृति को अलग-अलग रूपों में प्रस्तुत किया है।भक्ति काल और रीतिकाल में प्रकृति का सौंदर्य चित्रण प्रमुख रहा है, जबकि आधुनिक काल में पर्यावरणीय चेतना अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। कहीं साहित्यकारों ने अपने रचनाओं के माध्यम से पर्यावरण संतुलन, प्रकृति संरक्षण, और मानव की जिम्मेदारी जैसी विषयों को प्रमुखता से प्रस्तुत किया है। वर्तमान समय में पर्यावरण संकट के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए हिंदी साहित्य में नई दृष्टि और नव संकल्पनाई विकसित हो रही है।इन अवधारणाओं के माध्यम से साहित्य केवल प्रकृति का सौंदर्य वर्णन नहीं करता बल्कि पर्यावरण रक्षण के लिए सामाजिक चेतना भी उत्पन्न करता है। इस प्रकार हिंदी साहित्य पर्यावरण के महत्व को समझाने,प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने में और समाज को पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पर्यावरण और साहित्य का यह संबंध मानव और प्रकृति के संतुलित अस्तित्व की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

पर्यावरण का अर्थ और महत्व:

पर्यावरण दो शब्दों परि+आवरण से मिलकर बना है,जिसका अर्थ है परि- चारों तरफ, आवरण-घेरा,यानी प्रकृति में जो भी हमारे चारों ओर परिलक्षित होता है- वायु,जल,मृदा,पेड़,-पौधे, प्राणी आदि सभी पर्यावरण के अंग है और इन्हीं से पर्यावरण की रचना होती है। “सच पूछा जाए तो, आधुनिक मानव सभ्यता को प्रकृति द्वारा प्रदान की गई सबसे मूल्यवान निधि पर्यावरण है,जिसका संरक्षण एक बड़ा दायित्व है। आधुनिक वैज्ञानिक युग में यह आवश्यक है कि प्रकृति द्वारा प्रदत्त इस निधि का बुद्धिमत्तापूर्ण ढंग से उपयोग किया जाए और आने वाली पीढ़ी को भी इसके प्रति जागरूक बनाया जाए । पर्यावरणीय चेतना व पर्यावरण संरक्षण आज के योग की प्रमुख मांग है।”1प्राचीन काल के ऋषि - मुनियों तथा महापुरुषों ने पर्यावरण के चेतना को जन-जीवन से जोड़ने की कोशिश की है । उनके अनुसार प्रकृति से प्रेम और उसका सहचार्य ही मनुष्य को पर्यावरणीय प्रदूषण से बचा सकता है। अतः भारतीय संस्कृति हमेशा ही पर्यावरण संरक्षण के संदेश देती रही है । लेकिन आजकल स्वच्छ व शुद्ध प्राकृतिक पर्यावरण दूषित हो गया है, जिसके अनेक कारण है । प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक शोषण,

जनसंख्या में वृद्धि,अनियंत्रित औद्योगिकीकरण,और अनियोजित कांक्रीट भवनों का निर्माण, पर्यावरण असंगत विकास योजनाएं, परिवहन साधनों की संख्या में वृद्धि, खनन द्वारा खनिजों की प्राप्ति,जंगलों का नाश आदि के कारण पर्यावरणीय विघटन, प्रदूषण तथा परिस्थितिकीय असंतुलन होते हैं। हमारे कवि एवं लेखक इस खतरनाक स्थिति से पूर्णतया जागरुक है।हिंदी के अनेक विद्वान इस बात पर एकमत है कि जिस प्रकार दलित - विमर्श, किन्नर-विमर्श, और पर्यावरण-विमर्श के बिना अब कोई गंभीर बहस नहीं है । साहित्य समाज का दर्पण है। और समाज प्रकृति से अछूता नहीं रह सकता पर्यावरण केवल प्रकृति तक सीमित नहीं है बल्कि इसमें मनुष्य और उसके सामाजिक, सांस्कृतिक संबंध भी शामिल होते हैं। मनुष्य और प्रकृति एक दूसरे पर निर्भर है। यदि पर्यावरण का संतुलन बिगड़ा है तो उसका सीधा प्रभाव मानव जीवन पर पड़ता है। इसी कारण पर्यावरण संरक्षण आज मानवता की सबसे बड़ी आवश्यकता बन गया है।

हिंदी साहित्य में प्रकृति का स्वरूप:

हिंदी साहित्य के प्रारंभिक काल से ही प्रकृति का विशेष स्थान रहा है विभिन्न साहित्यकारों ने प्रकृति को अलग-अलग रूप में प्रस्तुत किया गया है।

1.**आदिकाल**: आदिकाल में प्रकृति का वर्णन वीरता और युद्ध के संदर्भ में मिलता है। उसे समय प्रकृति को युद्ध भूमि, जंगल और पर्वतों के रूप में देखा गया है।

2.**भक्ति काल**: भक्ति काल में प्रकृति को ईश्वर की सृष्टि और सौंदर्य के प्रतीक के रूप में चित्रित किया गया। संत कवियों ने प्रकृति के माध्यम से आध्यात्मिक भावों को व्यक्त किया।

3.रीतिकाल: रीतिकाल में प्रकृति का उपयोग मुख्यतः श्रृंगार और सौंदर्य वर्णन के लिए किया गया।कवियों ने ऋतुओं, फूलों, और बाग-बगीचों का सुंदर चित्रण किया।

आधुनिक काल:

आधुनिक काल में प्रकृति का चित्रण अधिक यथार्थवादी हो गया साहित्यकारों ने प्रकृति के सौंदर्य के साथ-साथ पर्यावरण समस्याओं को भी अपनी रचनाओं में स्थान दिया। आधुनिक हिंदी साहित्य में पर्यावरण के प्रति जागरूकता स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। कई साहित्यकारों ने प्रकृति और पर्यावरण को अपनी कलम का प्रमुख विषय बनाया। कविताओं, कहानियों, उपन्यासों और निबंधों के माध्यम से साहित्यकारों ने मानव और प्रकृति के संबंधों को समझने का प्रयास किया है। कुछ रचनाओं में प्रकृति को जीवनदायिनी शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है, तो कही पर्यावरण के विनाश परिणाम को दिखाया गया है। हिंदी के समकालीन कविता अपनी पूर्ववर्ती कविता की तुलना में जीवन के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित कविता है आज समाकलन हिंदी कविता की अपनी एक सुनिश्चित रूप रेखा बन चुकी है और यह काव्य धारा हिंदी साहित्य की एक प्रवृत्ति के रूप में उभर कर आई है। साहित्य के क्षेत्र में समकालीन शब्द का प्रयोग पहले सीमित अर्थ में सामाजिक तुलना में होता था बाद में समकालीन शब्द का प्रयोग वर्तमान के लिए किया जाने लगा अर्थात जो वर्तमान संदर्भ में मौजूद और सार्थक होता है, वह समकालीन है। समकालीनता मनुष्य को उसके संपूर्ण परिवेश के साथ पहचानती है।इसलिए समकालीन कवि अपने समय की विसंगति, विडंबना और विद्रूपताओं को पहचानकर उनका यथार्थ चित्रण करते हैं। वस्तुत: समकालीनता का स्रोत अपने परिवेश की सच्चाइयों के भीतर रहता है। समय के परिवर्तन के साथ कविता के परिदृश्य में भी एक बदलाव आया है।

इसलिए हम कह सकते हैं कि समकालीन कविता वस्तुत: अपने समय, और उसके सरोकारों से हमकलाम होना है। समकालीन कविता, उपन्यास साहित्य आदि विधाएं वर्तमान समाज के आदमी के सहजबोध का साहित्य है। पूंजीवाद के विकास के साथ-साथ उसकी संस्कृति भी विकसित होती रही है। वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद, बाजारबाद, आर्थिक साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद की संस्कृति इसी पूंजीवाद की देन है। भूमंडलीकरण और वैश्विक पूंजी के इस उत्तर आधुनिक दौर में कविता, उपन्यास और निबंध प्रत्येक घटना को बड़ी सजगता के साथ देख रहे हैं। आज समकालीनता का मतलब है पूंजी, स्वार्थ और अमानवीकरण के विरुद्ध जागृत होना। आज वैश्वीकरण और बाजारवाद की अंधी दौड़ में समस्त संसार शामिल होता जा रहा है। और इसमें मानवीय संवेदना कुंठित हो रही हैं और हमारी भाषा, संस्कृति, हमारी प्रकृति आदि सब कुछ हम से छीन ली जा रही है। इस संकट काल में हिंदी की समकालीन कविता अत्यन्त निड़रता और साहस के साथ संघर्ष करके आगे बढ़ रही है।

हिंदी के वरिष्ठ कवि आलोचक डॉ. वेद प्रकाश अमिताभ जी के अनुसार "संवेदना को सुरक्षित रखते हुए 'नारी', 'दलित', 'व्यवस्था', आदि के साथ-साथ 'पर्यावरण' भी समकालीन कविता की केंद्रीय चिंता का एक उल्लेखनीय पक्ष है। अतः यह आकस्मिक नहीं है कि समकालीन कविता में पर्यावरण - प्रदूषण से उत्पन्न चिंताएं भी जहां - जहां झांकती हैं। अनेक कवियों को लगता है कि आज की अनेक समस्याएं प्राकृतिक संतुलन के बिगड़ने से पैदा हुई है। औद्योगिक और नगरीकरण की अंधी दौड़ ने प्रकृति को इतना क्षति-विक्षत किया है कि उसका खामियाजा हमें कहीं स्तरों पर भुगतना पड़ रहा है। मौसम-चक्र गड़बड़ाने से लेकर ओजोन की पर्त में छेद हो जाने के हादसे मामूली नहीं है और उनके दुष्परिणाम दुरगामी है। हिंदी के अनेक कवियों ने चिंता व्यक्त की है कि जब तकनीकी सभ्यता धरती के स्नायु तंत्र को छिन्न-भिन्न करेगी, प्रकृति की स्वाभाविकता को नष्ट करेंगी तब धरती और प्रकृति विक्षुब्ध होगी ही।"2 रामदरश मिश्र, अरुण कमल, अशोक वाजपेई,चंद्रकांत देवताले, किशोरीलाल व्यास, एकांत श्रीवास्तव,ज्ञानेंद्रपति, लीलाधर मंडलोई,शिशुपाल सिंह, निर्मला पुत्तुल, मानिक बच्छावत, अशोक रावत, वीरेंद्र आस्तिक, कमलेश भट्ट कमल, विनोद पदरज, त्रिलोचन, केदारनाथ सिंह जैसे कवियों ने अपनी कविता में इस तथ्य को बखूबी उभारने की कोशिश की है।आपने समय एवं समाज के प्रति संवेदनशीलता रखने वाले इन कवियों की चिंता यह है कि हमारे हवा प्रदूषित हो रही है, मिट्टी और पानी ज़हरीली हो गयी है, जंगलों का विनाश हो रहा है, पेड़ -पौधे बड़ी मात्रा में कट रहे हैं और सबसे मौसम निरंतर बदलता जा रहा है।

शिशुपाल सिंह ने महाराष्ट्र के भूकंप का कारण प्रदूषण की विकृति मानते हुए वह कहा हैं "फैल रहा है प्रदूषण विकृति और विक्षोभ/ यथास्थिति से कहा मुक्ति/ कब तक चलेगा यह निर्मम चक्र/ नहीं चाहिए मुझे एक और लातुरा"3 कुछ रचनाओं में प्रकृतियों को जीवन दाहिनी शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है तो कुछ में पर्यावरण की विनाश का वास्तव परिणाम दिखाया गया है इस प्रकार साहित्य समाज को पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित करता है। धरती पर प्रकृति के विविध तत्वों के बीच संतुलन तभी पर बना रह सकता है जब धरती का कम से कम 33% तक के जंगलों से भरे हो। पेड़ - पौधे ऋतुओं का संचालन करते हैं, प्रदूषण का अवशोषण करते हैं और वातावरण को स्वच्छ सुंदर बनाए रखते हैं। आशुतोष कुमार झा आशु ने 'तब क्या होगा' शीर्षक कविता में पेड़ के महत्व के संबंध में इस प्रकार लिखा है "बड़ा होकर कितनों को/उसने फल चखाया/तपती दोपहरी में कितनों ने/ उसकी सघन छाया में/ आश्रय पाया,

विश्राम पाया/वह यह भी नहीं जानता।"4किसी भी देश के लिए वन - पारिस्थितिक,आर्थिक और पर्यावरणिक संपदा के अक्षुण्ण भंडार होते हैं।लेकिन हमारे देश का दुर्भाग्य यह है कि अनेकानेक कारणों से जंगलों का भारी विनाश हो रहा है। आधुनिकता के नाम पर आधुनिकरण के नाम पर जंगलों का विनाश हो रहा है। कभी यह महसूस करते हैं कि पेड़ कुल्हाड़ी का प्रहार चुपचाप सहता जाता है।इसलिए उन्हें यह कहना पड़ता है "वह सचमुच नहीं जानता/ कि अकस्मात किसने/ उसे पर कुल्हाड़ी चलाई/काट छोटे-छोटे टुकड़ों में/लकड़ियां किसने बेतरतीब सजाई ? किसने बाजार जाकर उसे बेचा/ किसने खरीदा।"5 एक वृक्ष काटने का अर्थ है समूची परंपरा और संस्कृति का विनाश। 'ग्लोबल गांव के देवता' इस उपन्यास में रणेन्द्र ने विकास के नाम पर वह राष्ट्रीय कंपनियों ने अपने कार्यालय स्थापित करके उनके खनिज और अन्य प्राकृतिक संसाधनों का भरपूर दोहन किया है और पर्यावरण के हानी की है।

विवेच्य उपन्यास में आदिवासियों की खनिज - सम्पत्ति की लूट लगातर जारी है।ये लोग खनन के नाम पर नैसर्गिक वातावरण से छेड़छाड़ कर रहे हैं, प्रकृति को उजाड़ने में लगें हैं, पहाड़ों का सौंदर्य भी बिगाड़ रहें हैं।इसमें झारखंड के आदिवासी क्षेत्रों में खनन और औद्योगिक विकास के कारण होने वाले पर्यावरण विनाश को दर्शाया गया है।अब तो यह जंगल भी पहले की तरह सगन नहीं रहे।ग्लोबल गांव के देवता एक सामाजिक और पर्यावरणीय उपन्यास है। इसमें आदिवासी समाज के जीवन और उनकी प्रकृति के साथ गहरे संबंध को दिखाया गया है।

उपन्यास में बताया गया है कि कैसे बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ और खनन उद्योग आदिवासी क्षेत्रों में प्रवेश कर जंगलों और पहाड़ों को नष्ट कर रहे हैं। इससे न केवल पर्यावरण को नुकसान होता है बल्कि आदिवासी लोगों की आजीविका और संस्कृति भी खतरे में पड़ जाती है।

उपन्यास में पर्यावरण का चित्रण:

इस उपन्यास में जंगल, नदियाँ, पहाड़ और प्राकृतिक संसाधनों का विस्तृत चित्रण मिलता है। आदिवासी समाज प्रकृति को अपनी माता के समान मानता है।उपन्यास में दिखाया गया है कि जंगल केवल पेड़ों का समूह नहीं है, बल्कि यह आदिवासी लोगों के जीवन का आधार है। जंगल उन्हें भोजन, औषधि, लकड़ी और जीवन जीने का साधन प्रदान करता है। लेखक ने यह भी दिखाया है कि जब जंगलों की कटाई होती है और खनन कार्य शुरू होता है, तो पर्यावरण का संतुलन बिगड़ जाता है।

पर्यावरण विनाश:

1. खनन के कारण जंगलों की कटाई: उपन्यास में बताया गया है कि खनन कंपनियाँ खनिज निकालने के लिए बड़े पैमाने पर जंगलों को काट देती हैं। इससे प्राकृतिक संतुलन बिगड़ जाता है और कई पशु-पक्षियों का निवास स्थान नष्ट हो जाता है।
2. नदियों और जल स्रोतों का प्रदूषण:खनन और औद्योगिक गतिविधियों के कारण नदियों और जल स्रोतों में प्रदूषण बढ़ जाता है। इससे स्थानीय लोगों को स्वच्छ पानी नहीं मिल पाता और स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं।
3. आदिवासी जीवन पर प्रभाव: जब जंगल नष्ट होते हैं तो आदिवासी लोगों की आजीविका भी समाप्त हो जाती है। वे जंगल पर निर्भर रहते हैं, इसलिए पर्यावरण विनाश उनके जीवन और संस्कृति दोनों को प्रभावित करता है।
4. पर्यावरण और आदिवासी संस्कृति: उपन्यास में यह स्पष्ट किया गया है कि आदिवासी समाज प्रकृति के साथ गहरा संबंध रखता है। वे जंगल, पहाड़ और नदियों को देवता के रूप में पूजते हैं। प्रकृति उनके

लिए केवल संसाधन नहीं है, बल्कि यह उनकी संस्कृति और परंपराओं का हिस्सा है। इसलिए जब पर्यावरण को नुकसान पहुँचता है तो यह केवल प्राकृतिक नुकसान नहीं होता, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक नुकसान भी होता है।

उपन्यास का संदेश:

ग्लोबल गांव के देवता हमें यह संदेश देता है कि विकास के नाम पर प्रकृति का अंधाधुंध दोहन सही नहीं है। विकास ऐसा होना चाहिए जो पर्यावरण और मानव जीवन दोनों के लिए संतुलित हो। यदि हम प्रकृति को नष्ट करेंगे तो अंततः इसका नुकसान पूरे समाज को होगा। उपन्यास हमें पर्यावरण संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों के सही उपयोग के लिए प्रेरित करता है। ग्लोबल गांव के देवता हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण उपन्यास है, जिसमें पर्यावरण और आदिवासी जीवन से जुड़े मुद्दों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है

गोदान:

इस उपन्यास के लेखक हैं मुंशी प्रेमचंद। यह हिंदी साहित्य का एक प्रसिद्ध सामाजिक उपन्यास है। इस उपन्यास में ग्रामीण जीवन, किसान की समस्याओं और प्रकृति के साथ उसके संबंध का यथार्थ चित्रण किया गया है। किसान का जीवन वर्षा, भूमि और पशुओं पर निर्भर होता है। जब प्रकृति अनुकूल होती है तो किसान का जीवन सुखी रहता है, लेकिन जब सूखा या प्राकृतिक संकट आता है तो उसका जीवन कठिन हो जाता है। इस प्रकार यह उपन्यास प्रकृति और मानव जीवन के गहरे संबंध को दर्शाता है।

मैला आँचल:

इस उपन्यास के लेखक हैं फणीश्वरनाथ रेणु। इसमें बिहार के ग्रामीण जीवन और प्राकृतिक वातावरण का अत्यंत सुंदर चित्रण किया गया है। उपन्यास में खेतों, नदियों, पेड़ों और गाँव के प्राकृतिक वातावरण का जीवंत वर्णन मिलता है। यह उपन्यास हमें यह बताता है कि प्रकृति और ग्रामीण समाज एक-दूसरे से कितने गहराई से जुड़े हुए हैं।

परती परिकथा:

यह भी फणीश्वरनाथ रेणु का महत्वपूर्ण उपन्यास है। इसमें भूमि, खेती और ग्रामीण जीवन के संबंधों का चित्रण किया गया है। इस उपन्यास में बंजर भूमि की समस्या और उसके सामाजिक प्रभाव को दिखाया गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि पर्यावरण का संतुलन समाज के विकास के लिए कितना आवश्यक है।

पर्यावरण संरक्षण में साहित्य की भूमिका:

साहित्य समाज को जागरूक करने का एक प्रभावी माध्यम है। उपन्यासकार अपने लेखन के माध्यम से समाज को यह संदेश देते हैं कि प्रकृति का संरक्षण करना आवश्यक है। जब पाठक उपन्यासों में प्रकृति की सुंदरता और उसके विनाश के परिणामों को पढ़ते हैं, तो उनके मन में पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता उत्पन्न होती है। इस प्रकार साहित्य पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरणा देने का कार्य करता है।

निष्कर्ष:

पर्यावरण और हिंदी उपन्यास का संबंध अत्यंत गहरा है। हिंदी उपन्यासों में प्रकृति का सुंदर चित्रण और पर्यावरणीय समस्याओं का वर्णन हमें यह समझने में मदद करता है कि प्रकृति मानव जीवन के लिए कितनी महत्वपूर्ण है।आज के समय में जब पर्यावरण संकट बढ़ता जा रहा है, तब साहित्य की भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। हिंदी साहित्य हमें यह संदेश देते हैं कि हमें प्रकृति का सम्मान करना चाहिए और पर्यावरण की रक्षा करनी चाहिए।यदि हम पर्यावरण का संरक्षण करेंगे, तभी आने वाली पीढ़ियों को एक स्वच्छ और सुरक्षित पृथ्वी मिल

सकेगी। निरंतर बढ़ते जा रहे पोलिथिन का प्रयोग मानव स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक सिद्ध हो जाता है।लीलाधर मंडलोई ने 'पोलिथिन की थैलियां' शीर्षक कविता में इस समस्या का चित्रण किया है कि "करोड़ों/या/अरबों/कितनीहो सकती है/ पोलिथिन की थैलियां/ कितने नदियों का दाम घट सकता है/ इन थैलियों में।"6 ज्ञानेंद्रपति ने भी पोलिथिन के बेहद उपयोग से उत्पन्न समस्याओं का चित्रण किया है। "पोलिथिन! पोलिथिन!/ तंगहूं मैं इस पोलिथिन से/ तंग बढ़ती जा रही है जगह जीवो को धरती पर/ बीजों को धरती पर/इसके कारण/जिधर देखो उधर पोलिथिन/पोलिथिन की मुट्ठी में बंद है बाजार।"7

पर्यावरण संरक्षण में हिंदी साहित्य की विविध विधाओं का बहुत बड़ा योगदान है। हिंदी कविताओं के माध्यम से तथा उपन्यासों के माध्यम से प्रकृति का वर्णन सिर्फ मोहक न करके जो वास्तविक स्थिति है उसका चित्रण कविताओं में और उपन्यासों में किया गया है। आज पर्यावरण संरक्षण के लिए शिक्षा के माध्यम से जागरूकता लाना बहुत महत्व है। महाविद्यालय में पर्यावरण से संबंधित विषयों को बढ़ाना बहुत महत्वपूर्ण है। साथ ही साहित्य के माध्यम से छात्र में प्रकृति की प्रति प्रेम और जिम्मेदारी की भावना विकसित करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। पर्यावरण संरक्षण के लिए तरह-तरह के कदम उठाना आवश्यक है जैसे वृक्षारोपण को बढ़ावा देना, प्लास्टिक के उपयोग को कम करना, जैव विविधता की रक्षा करना, नदियों और जल स्रोतों को स्वच्छ रखना। यदि समाज का प्रत्येक व्यक्ति उपायों को अपनाएं तो पर्यावरण की रक्षा संभव है। हिंदी साहित्य और पर्यावरण का संबंध अत्यंत गहरा है। साहित्य ने हमेशा प्रकृति के महत्व को समझने का प्रयास किया है। आज जब पर्यावरण का संकट दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है तब साहित्य ने अहम भूमिका निभा रहा है। नए संकल्पनाओं के माध्यम से साहित्य में पर्यावरण को नई दृष्टिकोण से देखा जा रहा है। उसके साथ मनुष्य का संतुलित संबंध बनाए रखने की आवश्यकता है इससे समाज तथा मनुष्य का भविष्य सुरक्षित है रह सकता है।

संदर्भ सूची:

1. श्याम मनोहर व्यास - भारतीय संस्कृति में पर्यावरण- संरक्षण शीर्षक लेख से मधुमति , जुलाई 2008
2. समकालीन काव्य : पर्यावरण विमर्श शीर्षक लेख से, मधुमति, फरवरी 2005,पृ.98
3. एक और लातूर शीर्षक कविता से,गंध - अगस्त 93, मार्च 1994,पृ.47
4. काव्यम, मार्च -अप्रेल,2007,पृ.10
5. आशुतोष कुमार झा अशो - काव्यम, मार्च-अप्रैल 2007, पृ.10
6. प्रगतिशील वसुधा,अप्रैल - जून ,2008 पृ.104
7. पोलिथिन,गंगातट,पृ.95